

۱۱-۱۲

أُنزِلَ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ إِنَّ

پڑھتے رہو جو وہی کی گئی ہے तुम्हारी तरफ़ किताब, और पाबन्द रहो नमाज़के. कि

الصَّلَاةَ تَتَمَّتْ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَ

नमाज़ रोकती रहती है बेशरमी और नागवार कामसे. और बेशक अल्लाहका जिक्र बड़ोत बड़ा है. और

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿۷۵﴾ وَلَا تَجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا

अल्लाह जानता है जो तुम लोग करो (४५) और तुम लोग मत जगड़ो अहले किताबसे, मगर

بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۗ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا

भुभसूरत तरीकेसे. मगर जिसने अंधेर भयाया उनमेंसे, और डेह दिया करो कि हमने मान लिया है

بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأَنْزَلَ إِلَيْكُمْ وَالْهُنَا وَالْهُنَا وَوَاحِدٌ ۗ وَ

जो नाज़िल किया गया है हमारी तरफ़, और जो नाज़िल किया गया तुम्हारी तरफ़, और हमारा तुम्हारा मा'बूद अक है, और

مُحَنٌّ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿۷۶﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ

हम उसीके आगे गरदन डाले हैं (४६) और इसी तरफ़ नाज़िल इरमाया हमने तुम्हारी तरफ़ किताब. तो जिनमें हम

اتَّبَعْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۗ وَمَا

दे चुके हैं किताब, वोह इसको भी मानें. और इन मक्कावालोंसे भी कोठ मान जाते हैं इसको. और नहीं

يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿۷۷﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ

ई-कार करते हमारी आयतोंका, मगर काफ़िर (४७) और नहीं पढा करते थे तुम इसके पहले कोठ

كِتَابٍ وَلَا مَخْطُوءَ بَيِّنَاتٍ إِذَا الْأَرْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿۷۸﴾ بَلْ هُوَ

किताब, और न लिखते थे कुछ अपने हाथसे, कि उस वक्त तो शक निकावते भातिलवाले (४८) बल्कि यह

آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أَوْثُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا

शोशन आयतें हैं उनके सीनोंमें, जिनमें ईल्म दिया गया है. और नहीं दानिस्ता ई-कार करते हमारी आयतोंसे,

إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿۷۹﴾ وَقَالُوا لَوْلَا أَنْزَلَ عَلَيْهِ آيَاتٍ مِّنْ رَبِّهِ قُلْ

मगर गुल्मवाले (४८) और बकने लगे कि क्यूं नहीं उतारी जाती उन पर अजाबकी निशानियां उनके रबकी तरफ़से, जवाब दो

إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿۸۰﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ

कि वोह निशानियां अल्लाहके पास हैं, और मैं बस साफ़ साफ़ उर सुनानेवाला हूँ (५०) क्या उन्हें काफ़ी नहीं

اِنَّا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً

कि हमने उतारी तुम पर किताब जो पढ़ी जाती है उन पर. बेशक इसमें यकीनन रहमत

وَذِكْرًا لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ۝۵۱ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ

और नसीहत है, उनके लिये जो मानें (५१) केह दो कि काफ़ी है अल्लाह मेरे और तुम्हारे

شَهِيْدًا ۙ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

दरमियान गवाह. वोह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीनमें है. और जो मान गये

بِالْبٰطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ اُوْلٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۵۲ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ

बातिलको, और ईश्वर कर दिया अल्लाहका, वोही घाटेवाले हैं (५२) और जल्दी मयाते हैं तुमसे

بِالْعَذٰبِ ۙ وَلَوْلَا اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاءَهُمُ الْعَذٰبُ ۙ وَلِيَاْتِيَنَّهُمْ

अजाबकी. और अगर न होता इसका मुकर्रर वक्त, तो ज़रूर आ जाता उन तक अजाब. और ज़रूर आयेगा

بَعْتُهُمْ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۵۳ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذٰبِ ۙ وَاِنَّ

उनके पास अयाबक, और वोह बेधबर होंगे (५३) जल्दबाजी करते हैं तुमसे अजाबकी. और बिलाशुभद

جَهَنَّمَ لَسٰحِيْطَةٌ يَّاكْفُرِيْنَ ۝۵۴ يَوْمَ يَغْشَاهُمْ الْعَذٰبُ مِنْ

जहन्नम घेरेमें लिये है काकिरोंको (५४) जिस दिन ढांप लेगा उन्हें अजाब उनके

قُوْبِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ دُوْقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۵۵

उपरसे और उनके पांव तलेसे, और इरमायेगा, कि यधो मजा अपने करतूतका (५५)

لِيُعٰبِدِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّ اَرْضِيْ وَاَسَعَتْ فَاَيُّهَا فَاَعْبُدُوْا ۝۵۶

औ मेरे वोह भन्दो ! जो मान युके हो, बिलाशुभद मेरी ज़मीन लम्बी चौड़ी है, तो मुजीको मा'बूद मानते रहो (५६)

كُلُّ نَفْسٍ ذٰئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝۵۷ وَالَّذِيْنَ

हर नफ़स मजा यभनेवाला है मौतका.. फिर हमारी तरफ़ तुम लोग लौटाये जाओगे (५७) और जो ईमान लाये

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا مَّجْرٰى

और लियाकतके काम किये, तो ज़रूर हम ठिकाना देंगे उन्हें जन्नतके बावापाने, बेह रही हैं

مِّنْ تَحْتِهَا اَنْهٰرٌ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝۵۸ وَالَّذِيْنَ

जिनके नीचे नहरें, हमेशा रहनेवाले उसमें. कितना अच्छा पवाब है अमलवालोंका (५८) जिनहोंने

صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿۵۹﴾ وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ

सब्रसे काम लिया और अपने रब ही पर भरोसा रभें (५९) और कितने जानदार हैं कि नहीं उठाये

رِثْرَقَهَا ۗ اللَّهُ يَرْتَفِقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۗ وَهُوَ السَّيِّعُ الْعَلِيمُ ﴿۶۰﴾ وَلَيِّنَ

रभते अपनी रोजी. अल्लाह उन्हें रोजी दे और तुमको भी. और वोही सुननेवाला धल्मवाला है (६०) और अगर तुम

سَأَلْتَهُمْ مِّنْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَسْحٰرِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ

सवाल करो उनसे कि किसने पैदा इरमाया आस्मानों और जमीनको, और काबूमें रभा सूरज और चांदको,

لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۗ فَاَنۢىٰ يُوَفِّكُوۡنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ يَبۡسُطُ الرِّسۡقَ لِمَنۢ

तो जरूर जवाब देंगे कि अल्लाह, तो फिर कहां औंधे जाते हैं (६१) अल्लाह कुशादा करे रोजी जिसकी

يَشَآءُ مِّنۢ عِبَادِهِ وَيَقۡدِرُ لَهُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيۡمٌ ﴿۶۲﴾

चाहे अपने बन्दोंसे, और तंगी करे जिसकी चाहे, बेशक अल्लाह हर ऐकका जाननेवाला है (६२)

وَلَيۡنۢىۡنَ سَأَلْتَهُم مِّنۢ نَّزۡلِ مِنَ السَّمٰوٰتِ مَآءٍ فَاَحۡيَاۤىۡهِ الْاَرْضَ

और अगर तुम पूछो उनसे कि किसने उतारा आस्मानकी तरफसे पानी, फिर जिन्दा इरमा दिया उससे जमीनको

مِّنۢۢ بَعۡدِ مَوۡتِهَا لَيَقُولَنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمۡدُ لِلّٰهِ ۗ بَلۡ اَكۡثَرُهُم

उसके मर जानेके बाद, जरूर केड देंगे कि अल्लाह. बोलो, 'अल्लहुमुदुबिल्लाह'. बल्कि उनके बोडतेरे

لَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۳﴾ وَاٰهۡذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنۡيَا ۗ اِلَّا لَهُۥٓ وَاَعۡبٌ وَّاِنَّ

अकल नहीं रभते (६३) और नहीं है यह दुन्यावाली जिन्दगी मगर भेलकूद. और बेशक

الدَّارِ الْاٰخِرَةِ ۗ لَهَا الْحَيٰوٰنُ مَلۡوۡكًا ۗ نَّوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۴﴾ فَاذۡا رَكَبُوۡا

आभिरतवाला घर, वोही जिन्दगी है... अगर वोड जान सकते (६४) तो जहां सवार

فِي الْفَلَکِ دَعَوۡا اللّٰهَ فَخٰلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ ۗ فَلَمَّا نَجَّوۡهُم

दूअे कश्तीमें, पुकारने लगे अल्लाहको, धल्वास रभते दूअे उसके साथ अकीटेका.. फिर जब बचा लाया उन्हें

اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمۡ يُشۡرِكُوۡنَ ﴿۶۵﴾ لَيَكۡفُرُوۡا بِمَاۤ اَتٰتٰهُمۡ ۗ وَلَيَسۡتَعۡوۡا

भुशकीकी तरफ, अब वोड शरीक बनाने लगे (६५) ताकि नाशुकी करें जो डमने दिया उन्हें, और उसे भरतें..

فَسَوۡفَ يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۶۶﴾ اَوَلَمۡ يَرُوۡا اَنَّا جَعَلۡنَا حَرَمًا مِّمَّا وُيۡحَظَفُ

तो जल्द भमियाजा जान ही लेंगे (६६) क्या उन्हें सूजा नहीं, कि डमने बना रभा है डरमको अमनकी जगड, और उयक लिये जाते हैं

تَكْوِيۡرٍ

فَاتِ الْاٰتِ

النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ أَقْبَا لِبَاطِلٍ يُؤْفُونَ وَيَنْعَمَ اللَّهُ يَكْفُرُونَ ﴿٤٧﴾

लोग उनके धर्मगिर्दके. तो क्या भातिल तो मानें, और अल्लाहकी ने'मतकी नाशुकी ही करते रहें (४७)

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ

और इससे ज्यादा अंधेरेवाला कौन, जो गढ़े अल्लाह पर जूट, या जुटवाये डक,

لَمَّا جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ الْيَسْرَى فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِينَ

जब वोड पास आ जाये. क्या नहीं है जहन्नममें ठिकाना काफ़िरोका (४८) और जिन्होंने

جَاهِدُوا وَفِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٩﴾

जेवा हमारी राहमें, तो जरूर हमराह देंगे उन्हें अपनी. और बेशक अल्लाह यकीनन ईप्प्लासवालोंके साथ है (४९)

سُورَةُ الرَّؤْمِ ۝ ۳۰ مَكِّيَّةٌ ۝ ۸۳

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اٰیٰتِهَا ۶

सूरअे ३० मक्किया

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात ६० रुकूअ ६

الَّتِي غُلِبَتِ الرَّؤْمُ ﴿١﴾ فِي آدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَلَيْهِمْ

अलिफ-लाम-मीम.. (१) डार गये ३मी (२) करीबकी जमीनमें, और वोड अपनी डारके बा'द

سَيَعْلَبُونَ ﴿٢﴾ فِي بَضْعِ سِنِينَ ۗ اللَّهُ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ

जहद जतोंगे (३) य-द सालमें... अल्लाह हीका हुकम है पहले और

بَعْدُ ۗ وَيَوْمَئِذٍ يَقْرَأُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾ بِنَصْرِ اللَّهِ ۗ يَنْصُرُ مَنْ

पीछे. और उस दिन पुश डो जायेंगे ईमानवाले (४) अल्लाहकी मददसे. वोड मदद करमाये जिसकी

يَشَاءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥﴾ وَعَدَّ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعَدُّ

याडे. और वोड गल्बेवाला रहमवाला है (५) अल्लाहका वा'दा. न भिलाफ़ करेगा अल्लाह अपने वा'देका.

وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ

लेकिन ओडतेरे लोग बेईल्म हैं (६) वोड लोग जानते हैं दु-यावी जिन्दगीके

الدُّنْيَا ۗ وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غٰفِلُونَ ﴿٧﴾ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي

आडिरे डालको, और आभिरतसे वोड सब लोग गाडिल हैं (७) क्या उन्होंने नहीं सोया

أَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا

अपने दिवोंमें.. कि नहीं पैदा करमाया अल्लाहने आस्मानों और जमीनको, और जो कुछ उनके



الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿۱۴﴾ قَسْبُحَانَ اللَّهِ

کے میلنےکو، تو وہ سب اجاہمیں دہر لیتے آئیں گے (۱۴) تو پاک ہے اہلآہکی

حِينَ تَسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿۱۵﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ

جس وقت تم لوگ شام کرو، اور جس وقت صبح کرو (۱۵) اور اسیکی حمد ہے آسمانوںمیں

وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿۱۶﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ

اور زمینمیں، اور سارے شام، اور جب دہوپہر کرو (۱۶) وہ نکالے جیندہکو

الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ

مردہسے، اور نکالے مردہکو جیندہسے، اور جیوا دے زمینکو اُسکے

مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿۱۷﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ

مردنےکے با'د. اور اسی तरہ تم لوگ وہی نکالے آئیں گے (۱۷) اور اُسکی نشانیاںسے ہے کہ پیدا کر مایا تمہیں

تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿۱۸﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ

مٹیسے، پھر اب تم پھرتے موہرےوالے ہو، پھرتے آتے ہو (۱۸) اور اُسکی نشانیاںسے ہے کہ پیدا

لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ

کر مایا تمہارے لیتے، تمہیںسے جوڑے، کہ آرام پاؤ اُنکی तरہ. اور کر دیا تمہارے دہرمیابان

مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿۱۹﴾ وَ

مہذبمت اور رذبمت. ہشک اُسمیں آڑر نشانیاں ہیں اُنکے لیتے جو سوچیں (۱۹) اور

مِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافَ أَلْسِنَتِكُمْ

اُسکی نشانیاںسے ہے پیدا کر مایا آسمانوں اور زمینکو، اور جوڑا جوڑا ہونا تمہاری زبانوں

وَالْوَاوِيكُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ﴿۲۰﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ

اور رنگتوںکا. ہشک اُسمیں یکنون نشانیاں ہیں جاننےوالوںکے لیتے (۲۰) اور اُسکی نشانیاںسے ہے

مَنَامَكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤَكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّ فِي

تمہارا سونا، رات اور دن، اور تمہارا تلاش کرنا اُسکے فضلکو. ہشک اُسمیں

ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ﴿۲۱﴾ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ

آڑر نشانیاں ہیں اُنکے لیتے جو گوشہ گوشہ رہتے ہیں (۲۱) اور اُسکی نشانیاںسے ہے کہ دیکھاتا رہتا ہے تمہیں بجلی،

خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُحْيِي بِهِ الْأَرْضَ

उसकी और लावय लगाती, और उतारता है आस्मानकी तरफसे पानी, तो जिन्दा कर देता है उससे जमीनकी

بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿۳۷﴾ وَمِنْ

उसके मरनेके बाद. बेशक इसमें जरूर निशानियां हैं उनके लिये जो अकल रખते हैं (२४) और उसकी

آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ۗ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ

निशानियोंसे है यह, कि काईम हैं आस्मान व जमीन उसके हुकमसे. फिर जहां उसने अेक पुकार तुम्हें

دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْأَرْضِ ۖ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿۳۸﴾ وَلَهُ مَن فِي

पुकारा. जमीनसे, कौरन तुम निकल पडोगे (२५) और उसीका हैं जो

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ كُلٌّ لَّهُ قَدْتُونَ ﴿۳۹﴾ وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ

आस्मानोंमें हैं और जमीनमें. सब उसके इरमा बरदार है. (२६) और वोही है जो ईप्तिदा इरमाता है

الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۗ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ

पक क्री, फिर दोबारा लायेगा उन्हें, और यह ज़यादा आसान है उस पर. और उसीकी शान बुल्द व बावा है

﴿۳۷﴾

فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿۳۷﴾ ضَرَبَ لَكُمْ

आस्मानों और जमीनमें. और वोह गल्बेवाला हिकमतवाला है (२७) अेक तुम्हारी जर्बुल

مَثَلًا مِّنَ أَنْفُسِكُمْ ۗ هَلْ لَكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ

मिषल बनाई भुद तुम्हींसे, कि क्या तुम्हारा कोई जेरदस्त गुलामोंसे, कोई

شُرَكَاءَ فِي مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ مِّمَّنْ رَزَقْنَاهُمْ كَخَيْفَتِكُمْ

शरीक है, उस मालमें जो हमने तुम्हें दे रखा है, कि तुम इसमें बराबर बराबर हो, उनसे उरते रहते हो, जैसे अपनों

أَنْفُسِكُمْ ۗ كَذَلِكَ نَفِصِلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿۳۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ

से तुम्हारा उरना है. इस तरह हम मुफ़रसल बयान करते हैं आयतोंको उनके लिये जो अकलसे काम लें (२८) बल्कि पीछे लग गये

الَّذِينَ ظَلَمُوا ۗ أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ فَسَنُ يَهْدِي مَنِ أَضَلَّ

जालिम लोग अपनी ज्वाडिशोंके, बेजाने भूजे. तो कौन राह दे उसे जिसे बेराह रखा

اللَّهُ ۗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ لِّصِيرِينَ ﴿۳۹﴾ فَأَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا

अल्वाहने, और नहीं है उनका कोई मददगार (२८) तो सीधा अपना रुभ रभो इरमांभरदारीके लिये यकसूई हो कर.

فَطَرَتِ اللَّهُ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ

अल्लाहकी क़ितरत, जिस पर पैदा इरमाया लुगुुुु, नाकाबिले तबदील हे अल्लाहका बनाया.

ذَلِكَ الدِّينَ الْقَيِّمُ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۰﴾

यही हे सीधा दीन. लेकिन बहुतेरे लोग नहीं जानते (३०)

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ

उसकी तरफ़ जुकते हुए और उसे डरो, और पाबंदी करते रहो नमाज़की, और न हो कभी

الْمُشْرِكِينَ ۚ ﴿۳۱﴾ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِبَعًا

शिक करनेवालोंसे (३१) उन लोगोंसे जिन्होंने टुकड़े टुकड़े कर दिया अपना दीन, हो गये शयआ शयआ.

كُلِّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿۳۲﴾ وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ

हर गिरोह जो उनके नज़दीक है, उसीसे मुश हँ (३२) और जब धू गया लोगोंको नुकसान, तो

دَعَاؤُا رَبِّهِمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِّنْهُ رَحِمَهُ

पुकारने लगे अपने रबको रुजूअ करते उसकी तरफ़, फिर जब यमा दिया उन्हें अपनी तरफ़से रहमतको,

إِذَا فَرِحُوا مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿۳۳﴾ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ

तो अब उनका अक इरीक अपने रबसे शिक करने लगा (३३) ताकि नाशुकी करें जो हमने उन्हें दे रमा है.

فَتَشْعُرُوا ۗ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿۳۴﴾ أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

तो भरत लो... कि जल्द अज़म जान लगे (३४) या हमने उतारी है उन पर कौँ

فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿۳۵﴾ وَإِذَا آذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً

सन्द, कि वोह बताती है जो वोह शरीक बनाते थे (३५) और जब यमाया हमने लोगोंकी रहमत, तो

فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِيبَهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا

मुश हो गये उससे. और अगर लगी उन्हें बुराई, असभल इसके जो पहले कर रमा है उनके हाथोंने, तो

هُمْ يَقْنُطُونَ ﴿۳۶﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ

अब वोह ना उम्मीद हँ (३६) क्या नहीं देमा उन्होंने, कि बिलाशुअल अल्लाह कुशादा इरमाता है रोजी जिसकी चाहे,

وَيَقْدِرُ ۗ إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿۳۷﴾ قَاتِ ذَا الْقُرْبٰنِي

और तंग करता है. भेसक इसमें ऊरर निशानियाँ हँ उनके लिये जो मानें (३७) तो दिया करो कराबतदारकी

حَقَّةً وَالسُّكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۗ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ

उसका उक और मिरकीनको और मुसाकिरकी. यउ बेउतर हे उनके विये जो

يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْتُمُ

याउते हे अल्लाउका करम. और यही लोग कामियाब हे (उउ) और जो तोउकेकी थीउ तुम लोगोंने दी

مِّن رِّبَا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا

बढन्तीकी, कि बढ जाअे देनेवालेका माव, तो न बढन्ती होगी अल्लाउके यहां. और जो थीउ

آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ

भेरातकी दो, याउते हूअे अल्लाउका करम, तो वोडी हे

الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُبَيِّنُ لَكُمْ

दूना करनेवाले (उउ) अल्लाउ हे जिसने पैदा इरमाया तुम्हे, इर रोजी दी तुम्हे, इर मारेगा तुम्हे,

ثُمَّ يُبَيِّنُ لَكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَن يَفْعَلُ مِن ذِكْرِكُمْ مِّن

इर जिलाअेगा तुम्हे. क्या तुम्हारे बनाअे शरीकमें कोर हे, जो कर सके उनमेंसे

شَيْءٍ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي

कुध ? पाकी हे उसकी, और बुलन्दो बावा हे उनसे, जिनको शरीक बनाते हो (उउ) इव गर गउडउ,

الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُبَيِّنَ لَهُم مَّا كَانَتْ

भुशकी व तरीमें, ब सबाब उसके जो कमाया लोगोंने उथोंने, ताकि यभा दे मजा उनहे कुध रसका,

الَّذِي عَمِلُوا الْعَمَلَهُم بِرِجْعَتِهِمْ ۗ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ

जो करते रहे, कि वोउ बाउ आअे (उउ) केउ दो कि सैर करो उमीनमें,

فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلُ ۗ كَانُوا أَكْثَرُ

तो देभो कि केसा हुवा अ-जम उनका, जो पउले हूअे. उनके बाउतरे

مُشْرِكِينَ ﴿٤١﴾ فَأَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِن قَبْلِ ۗ إِنَّ

मुशिरक थे (उउ) तो अपना रुप सीधा रभो सीधे दीनके विये, कवल रसके कि

يَأْتِي يَوْمًا لَا مَرَدَ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدِّقُونَ ﴿٤٢﴾ مَن

आअे वोउ दिन, जिसे टलना नहीं हे अल्लाउकी तरफसे, उस दिन सब इट छंट जाअेगे (उउ) जिसने

كَفَرًا فَعَلَيْهِمْ كُفْرُهُمْ ۗ وَمَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلَا نَفْسَ لَهُمْ بِرَهْدٍ وَّوَن ﴿۳۷﴾

ن मानا, तो उस पर उसका कुछ है. और जिसने विधाकतके काम किये, तो अपने विधे वोह सामान शुद्ध करते हैं (४४)

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ

ताकि पवाब दे जो ईमान लाये, और करनेके काम किये अपने इज्जलसे. बेशक वोह

لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۸﴾ وَمِنْ آيٰتِهِۦٓ اَنْ يُرْسِلَ الرِّيَّاحَ مُبَشِّرٰتٍ

नहीं पसन्द इरमाता ई-कार करनेवालोंको (४५) और उसकी निशानियोंसे है कि यवा देता है उवाओंको भुश भवरी देती,

وَلِيُنذِرَ يٰكُفْرًا مِّن رَّحْمَتِهِۦ وَلِيَجْزِيَ الْفٰلِكُ بِأَمْرِهِۦ وَلِيَتَّبِعُوْا

और ताकि यभा दे तुम्हें अपनी रहमतसे, और ताकि रवां हों कश्तियां उसके हुकमसे, और ताकि तलाश करो

مِّن فَضْلِهِۦٓ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۹﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ

उसका इज्जल, और शुक्शुआर हो जाओ (४६) और बेशक भेजा हमने तुमसे पहले

رُسُلًا اِلَىٰ قَوْمِهِمْ فِجَاءٍ وَّهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَاَنْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ

रसूलोंको उनकी कौमकी तरफ, तो वोह लाये उनके पास रौशन निशानियां, तो बढवा लिया हमने उनसे जिन्हों

اٰجْرَمُوْا ۗ وَ كَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۰﴾ اَللّٰهُ الَّذِي

ने जुर्म किया. और हमारे जिम्मे करम पर है माननेवालोंकी मदद करना (४७) अल्लाह है जो यवाता है

يُرْسِلُ الرِّيَّاحَ فَتُثَبِّرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِى السَّمٰوٰتِ كَيْفَ

उवाओंको, फिर वोह उठाती हैं भादल, फिर इवा देता है उसको आस्मानमें जिस तरफ

يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلْفِهِۦٓ فَاِذَا

याडे, और कर देता है उसके टुकडे टुकडे, तो देखते हो कि निकलता है उसके अन्दरसे भीड. तो जब

اَصَابَ بِهِۦٓ مِنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۱﴾

पहोंया दिया उसे जिसको याडा अपने बन्दोंसे, तो अब वोह भुशी मनाते हैं (४८)

وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّن قَبْلِهِۦ لَكٰبِلٰسِيْنَ ﴿۴۲﴾

गो वोह थे, कबल ईसके कि उतारा जाये उन पर, पेशतरसे नाउम्मीद (४९)

فَاَنْظُرْ اِلَىٰ اَثْرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ

तो देखो अल्लाहकी रहमतके इाईदोंको, कैसा जिन्दा कर देता है जमीनको उसकी मौतके बाद.

إِنَّ ذَلِكَ لَمَنْحَى الْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝۵۰ وَلَئِن

بेशक वोड ज़र मुर्दोंको ज़िवानेवाला है और वोड हर याडे पर कुदरत रभता है (५०) और अगर

أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝۵۱

यवाएँ डमने डवा, फिर डेभ लिया उन्डोंने उसके सभभ रंगीन भेती, तो ज़र डो गअे उसके भा'द नाशुके (५१)

فَأَنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تَسْمِعُ الصَّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَاوَّاءُ

कि भिलाशुभल तुम नहीं कान डे सकते एँन मुर्दोंको, और न पैगाम सुननेके क़ाबिल कर सकी एँन बडरोंको, जब उन्डोंने

مُدْبِرِينَ ۝۵۲ وَمَا أَنْتَ بِهَدِ الْعَبْيَ عَنْ ضَلَّتْهُمْ إِنْ تَسْمِعُ

रुभ डेर लिया पीठ डिभा कर (५२) और नहीं है तुमडारे जिम्मे एँन अन्धोंको राड डेना एँनकी भे राडीसे. तुम नहीं सुनाते

إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝۵۳ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ

मगर जो मानें डमारी आयतोंको, फिर वोड नियाज मन्दी वाले हैं (५३) अल्लाड है जिसने पैदा किया तुमडें

مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ

कमजोर, फिर डिया कमजोरीके भा'द जोर, फिर डी जोर

بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝۵۴

के भा'द कमजोरी और बढाया. पैदा करे जो याडे. और वोडी एँलमवाला कुदरतवाला है (५४)

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ السُّجْرُمُونَ ۚ مَا لِبَشَرٍ غَيْرِ

और जिस डिन क़ाँठम डोगी क़्यामत, कसम भाअंगे मुजुरिम लोग.. कि नहीं रहे थे मगर

سَاعَةٍ ۚ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۝۵۵ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ

घडी लर एँसी तरड यड ओँधे जानते थे (५५) और बताया जिन्हें डिया गया है एँलम

وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهَذَا

व एँमान, कि बेशक तुम रहे अल्लाडके लिभमें एँनेके डिन तक. तो यड

يَوْمَ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝۵۶ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُنْفَعُ

एँनेका डिन है, लेकिन तुम लोग नहीं जानते थे (५६) तो आजके डिन न नफ़अ डेगा,

الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعَذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝۵۷ وَلَقَدْ

जिन्होंने अंधेर मया रभा था एँनका कोएँ बडाना, और न अब तोभा कराअे जाअंगे (५७) और बेशक

۝۵۰  
۝۵۱  
۝۵۲  
۝۵۳  
۝۵۴  
۝۵۵  
۝۵۶  
۝۵۷

صَرَيْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ط وَكِتٌ

बयान कर ही हमने लोगोंके लिये इस कुरआनमें हर तरहकी कथावत. और अगर वे आये

جَنَّتَهُمْ بِآيَةٍ لِيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطَلُونَ ۝۸

तुम उनके पास कोई निशानी, तो उड़र कहेंगे जिन्होंने कुफ़ कर रभा है, कि तुम बस भातिल वाले हो (५८)

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝۹ فَاصْبِرْ

ईसी तरह छाप लगा देता है अल्लाह, उनके दिलों पर, जो बेईल्म हैं (५८) तो सध्र करो.

إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝۱۰

बेशक अल्लाहका वा'दा दुरुस्त है. और न बेबरदाशत बना सके तुम्हें, जो यकीन नहीं रभते (६०)

سُورَةُ الْقِنَنِ ۝۳۱ مَكِّيَّةٌ ۝۴

सूरअे लुकमान मकिथ्या

नामसे अल्लाहके बडा महरमान बभशनेवाला

आयात ३४ रुकूअ ४

الَّتِي تِلْكَ آيَاتِ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝۲ هُدًى وَرَحْمَةً لِلْمُحْسِنِينَ ۝۱

अलीक-लाम-मीम.. (१) यह आयतें हैं छिकमतवाली किताबकी (२) छिदायत व रहमत मुश्विसोंके लिये (३)

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ

जो पाबन्दी करे नमाजकी, और दे जकात. और वोह आभिरत पर

يُوقِنُونَ ۝۴ أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمْ

यकीन रभें (४) वोही हैं छिदायत पर अपने रभकी तरहसे, और वोही हैं

الْمُقْلِحُونَ ۝۵ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ

कामियाब (५) और कुछ लोगोंमें वोह है, जो मोल ले गइलतमें डालनेवाली बात, ताकि बलका दे

عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۝۶ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ

अल्लाहकी राहसे नादानीसे. और बना ले उसे मजाक. उन्हीके लिये अजाब है

مُهِينٌ ۝۷ وَإِذْ أَنْتَلَى عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَى مُسْتَكْبِرًا كَانُ لَمْ يَسْمَعْهَا

रुस्वा करनेवाला (६) और जब तिलावतकी जअे उस पर हमारी आयतें, तो उसने मुंड डेर लिया बडाईकी डींग लेता, गो जैसे उसे सुना

كَانَ فِي أذُنَيْهِ وَقَرَأَ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابِ الْيَوْمِ ۝۸ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا

ही नहीं, गोया उसके कानोंमें टेंटे है. तो मुज्दा दे दो उसे दुभवाले अजाबका (७) बेशक जो ईमान लाये

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَمْ جَدُّ النَّعِيمِ ① خَلِيدِينَ فِيهَا وَعَدَّ اللَّهُ

और बियाकतके काम किये, उन्हींके लिये हैं औशके भाग (८) हमेशा रहनेवाले उसमें. अल्लाहका वा'दा बिदकुल

حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ② خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ

ठीक. और वोही र्छजतवाला हिकमतवाला है (८) पैदा करमाया आस्मानोंको बगैर भम्भेके, तुम लोग देख रहे हो, और

الْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ

ढोंक दिया जमीनमें पहाड़ोंके बंगर, कि कहीं छिल जाये तुमको ले कर, और झेला दिया उसमें हर किसमके

دَابَّةٍ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ③

जानवर. और उतारा हमने आस्मानकी तरफसे पानी, तो उगा दिया हमने उसमें हर किसमके उम्दा जोड़े (१०)

هَذَا خَلَقَ اللَّهُ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ④ بَلِ

यह अल्लाहका पैदा किया हुआ है, तो तुम लोग मुझे दिखा दो, कि क्या पैदा किया उन्हींने जो उसे फर्जी मुकाबिल हैं? बल्कि

الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ⑤ وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ

जालिम लोग भुली गुमराहीमें हैं (११) और बेशक ही हमने लुकमानको हिकमत, कि

اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ⑥ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ

शुक अदा करो अल्लाहका. और जो शुक अदा करे, तो वोह शुक अदा करता है अपने (बलको). और जिसने नाशुकी की, तो बिलाशुबह अल्लाह,

غَنِيٌّ حَسِيدٌ ⑦ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَبْنِيُّ لَا

भे परवाह हमदवाला है (१२) और जब कडा लुकमानने अपने बेटेको, और वोह उसे नसीहत कर रहे थे, कि मेरे बेटे मत

تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ⑧ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ

शरीक हहराना अल्लाहके साथ.. बेशक शरीक हहराना यकीनन बडा अंधेर है (१३) और ताकीद करमाई हमने र्छसानको

بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ وَهَذَا عَلَى وَهْنٍ وَفِطْرَتِي فِي عَمِيمٍ

उसके मांभापके हकमें, पेटमें रभा उसकी मांने कमजोरी पर कमजोरी सहती छूँ, और उसका दूध छूटना दो बरसमें

أَنْ أَشْكُرَ لِي وَبِوَالِدَيْكَ إِلَى الْمَصِيرِ ⑨ وَإِنْ جَاهَدَاكَ عَلَى أَنْ

है, कि शुकगुजार रहो मेरे और अपने मां भापके, मेरी ही तरफ़ फिर आना है (१४) और अगर हभाव डालें तुम पर, र्छस पर कि

تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهَا فِي

शरीक बनाओ मेरा जिसका तुम्हें कुछ र्छल्म नहीं, तो मत कडा मानो उनका, और उनका साथ दो

الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَآتِيَكُمْ سَبِيلٌ مِّنْ أَنَا بَ إِلَى تَمَّ إِلَى مَرَجِعِكُمْ

दुनियामें अच्छी तरहसे. और तकलीद करो उस शम्सके तरीकेकी, जिसने रुजूअ किया मेरी तरफ़, फिर मेरी ही तरफ़ तुम

فَأْتِيَكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يَبْنِي أَمْهَانَ تَكُ وَمُنْقَالَ حَبَّةِ

लोगोंका लौटना है, तो बता दूंगा मैं तुमको जो तुम करते थे (१५) और मेरे बेटे ! बिलाशुभअ अगर करतूत राई

مِّنْ حَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ

के दाने बराबर छो, फिर वोछ छो किसी पत्थरमें, या आस्मानोंमें, या जमीनमें, ले आयेगा

بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ يَبْنِي أَمْرَ الصَّلَاةِ وَأَمْرٌ

उसे अल्लाह. बेशक अल्लाह उर भारीकीका जाननेवाला बतानेवाला है (१६) और मेरे बेटे पाबन्दी रफो नमाजकी, और हुकम दो

بِالسُّعْرُوفِ وَإِنَّهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ

नेकीका, और रोको बुराईसे, और सध करो इस पर जो मुसीबत आये तुम्हारी. बेशक यह

مِنْ عَذْرِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا تَصْعَرَ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْسِسْ

होंसलेके काम हें (१७) और मत बेरुभी करना लोगोंसे, और न खलना

فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ ۱۸ ۚ وَأَقْصِدْ

जमीनमें छतरा कर. बेशक अल्लाह नहीं पसन्द करमाता किसी छतरानेवाले, डींग मारनेवालेको (१८) और मियानारवी

فِي مَشْيِكَ وَأَعْصِصْ مِنْ صَوْتِكَ إِنَّ أَكْثَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ

रफो अपनी थालमें, और पस्त रफा करो अपनी आवाज. बेशक सबसे ज़्यादा नागवार आवाज यकीनन गधेकी

الْحَمِيرِ ۝ ۱۹ ۚ أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

आवाजहै (१९) क्या तुम लोगोंने नहीं देखा, कि बिलाशुभअ अल्लाहने कभूमें कर दिया तुम्हारे, जो कुछ आस्मानोंमें है और जो कुछ जमीनमें

وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعْمًا ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۚ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ

है, और भरपूर उतारा तुम पर अपनी जादिर व बातिन ने'मतोंको. और उन्हीं लोगोंमें वोछ है, कि जगडता है

فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ ۲۰ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ

अल्लाहके बारेमें, न छलम और न छिदायत, और न कोछ चौशन किताब (२०) और जब कडा गया उन्हें, कि

اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ

पैरवी करो उसकी, जिसे उतारा अल्लाहने, बोले कि हम पैरवी करते हें जिस पर पाया हमने अपने बापदादोंको.

أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدَّ عَوْهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿۲۱﴾ وَمَنْ يُسَلِّمْ

क्या गो शैतान बुला रहा हो उन्हें जहन्नमके अज्जबकी तरफ (२१) और जो जुका दे

وَجَهَّةَ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَسَاكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَ

अपना रूप अल्लाहकी तरफ, और वोड मुप्सि है, तो उसने थाम लिया मजबूत कडीको. और

إِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿۲۲﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ إِلَيْتَامُ جَحِيمٍ

अल्लाह ही की तरफ है सारे कामोंका अन्जाम (२२) और जिसने कुफ़ किया, तो न रन्छदा करे तुम्हें उसका कुफ़. हमारे ही तरफ

فَتَنَّبَهُمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿۲۳﴾ نَسْتَعْتُهُمْ

उनका लौटना है, फिर बता देंगे हम जो उन्होंने कर रभा है. भेशक अल्लाह जानता है सीनेवाली बातको (२३) भरतने देते हैं

قَلِيلًا ثُمَّ نَضَّطَّرَّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿۲۴﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ

हम उन्हें कुछ, फिर बेताब कर देंगे हम उन्हें सप्त अज्जबकी तरफ (२४) और अगर तुमने पूछा उनसे कि किस

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ

ने पैदा इरमाया आस्मानों और जमीनको, तो जरूर जवाब देंगे कि अल्लाह. कडो, कि "अललहुमुदुलिल्लाह." बल्कि

أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۲۵﴾ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ

उनके बोडतेरे बेईल्म हैं (२५) अल्लाह हीका है जो कुछ आस्मानों और जमीनमें है. भेशक अल्लाह ही

هُوَ الْعَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَ

बेपरवाड उम्दवाला है (२६) और अगर बिलाशुबड जो कुछ जमीनमें हैं दरफ्त, कलम हों, और

الْبَحْرِ يَمْدًا مِنْ بَعْدِهِ سَبْعًا أَمْحَرْنَا نَقَدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ

समन्दर रौशनाई हो उनकी, अेकके पीछे सात समन्दर, तो भी न फत्म हों अल्लाहके कलिमे. भेशक

اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿۲७﴾ مَا خَلَقَكُمْ وَلَا بَعَثَكُمْ إِلَّا كُنْفُسٍ وَأَحَدَةٌ إِنَّ

अल्लाह ईज्जतवाला हिकमतवाला है (२७) नहीं है तुम सबका पैदा करना और तुम सबको उठाना, मगर जैसे अेक जानका. भेशक

اللَّهُ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿۲८﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ

अल्लाह सुननेवाला देभनेवाला है (२८) क्या तुमने नहीं देभा, कि भेशक अल्लाह दाभिल करता है रातको दिनमें, और दाभिल करता

النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ

रहता है दिनको रातमें, और काबूमें रभा सूरज और चांदको. हर अेक चल रहा है भीआदे

مُسَيِّئًا ۱۹۰ وَإِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۱۹۱ ۞ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ

मुकर्रर तक, और बेशक अल्लाह, जो तुम लोग करो उससे बाबबर है (२८) यह इस लिये कि अल्लाह ही

الْحَقُّ وَإِنَّ مَا يَدَّعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ ۱۹۲ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ

हक है, और बेशक जिसकी वोह लोग दुहाई देते हैं अल्लाहके भिवाङ, बातिल है. और बेशक अल्लाह ही बुलन्द बडाई

الْكَبِيرُ ۱۹۳ أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ يَنْعَمَتِ اللَّهُ لِيُرِيَكُمْ

वाला है (३०) क्या नहीं देभा तुमने कि कश्तियां चलती हैं दरियामें अल्लाहके करमसे, ताकि दिभा दे

فَإِنَّ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۱۹४ وَإِذَا غَشِيَهُمْ

तुम्हें अपनी कुछ निशानियां, बेशक उसमें उडर निशानियां हैं हर सब्र करनेवाले शुक्गुजारके लिये (३१) और जहां छाप लिया

مَوْجٌ كَالظُّلْمِ دَعَا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۱۹۵ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى

उन्हें भोजने भिषल साअेभानके, तो पुकारने लगे अल्लाहको नरे अल्लाहके हो कर अकीदेमें.. फिर जब बया लिया उन्हें

الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُمْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۱९६

भुशकीकी तरङ, तो कोई है कि अे'तेदाल पर है. और नहीं ठन्कार करता हमारी आयतोंका, मगर सारे बढअहद नाशुके (३२)

يَأْتِيهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ وَأَخْشَوْا يَوْمَ لَا تَجْزِي وَالِدٌ عَنْ

अे लोगो ! उरो अपने रबकी, और भौङ करो उस दिनका, कि न काम आअेगा बाप

وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَارِعٌ ۱९७ وَاللَّهُ شَهِيدٌ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ

अपने बख्येके. और न कोई बख्या ही काम आअे अपने बापके कुछ. बेशक अल्लाहका वा'दा दुरस्त है,

فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۱९८ وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۱९९ إِنَّ

तो न धोकेमें डाले तुम्हें दुन्यावाली जिन्दगी.. और न धोका दे सके तुम्हें अल्लाहके बारेमें पक्का धोकेबाज, शैतान (३३)

اللَّهُ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۲०० وَيُنزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ

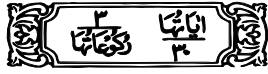
बेशक अल्लाहको है क्यामतका ईल्म. और वोह उतारे भीहकी. और वोह जाने जो कुछ मांओके पेटमें है.

وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۲०१ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ

और नहीं अटकल रभता कोई, कि क्या कमाअेगा कल. और न क्यास कर सके कोई,

بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۲०२ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۲०३

कि किस जमीनमें मरेगा. बेशक अल्लाह जाननेवाला बतानेवाला है (३४)



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



سورہ سجدہ کی مکی مکہ کی

نام سے ازلہ لاکے ہذا مہر بان ہاشیہ ہا

آیات ٣٠ رُکُوع ٣

الْعَمَّ ١ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَارَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٢ أَمْ

اے اللہ! کتاب کی نازلگی کے بارے میں کوئی شک نہیں ہے، کیونکہ یہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہے (۱) اور کیا ہے (۲) یا کہہ دیجئے

يَقُولُونَ أَفَنُؤَذِّنُ بِمَا نُرَوِّدُكَ مِنَ الْغَيْبِ لِيُنذِرَ قَوْمًا مِمَّا أَتَاهُمْ

کہہ دیتے ہیں کہ کیا ہم تجھے ان کے بارے میں خبر دے سکتے ہیں جو ان کے پاس پہنچ چکی ہے تاکہ ان کو خبر دے سکیں

مَنْ نُنذِرُ مَنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ٣ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ

وہ جس سے پہلے میں نے کوئی نہیں ڈالا، تاکہ ان کو سزا دے سکیں (۳) اللہ جس نے

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَىٰ

آسمانوں اور زمین کو، اور جو کچھ ان کے درمیان ہے، چھ دنوں میں، اور

الْعَرْشِ ٤ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ٥ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ٥

پر، نہیں ہے تمہارا اس سے الگ رہ کر کوئی یار نہ سیکھ سکتا۔ تو کیا سوچتے نہیں ہو؟ (۴) (۵)

يُدْبِرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ

وہ اس دن میں زمین سے آسمان کی طرف سے امر کو دیکھتا ہے اور اس کو اپنے پاس لے آتا ہے

مِقْدَارًا أَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ٥ ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ

کی جس کی مقدار ہزار سال ہے، جس کا علم ہے تمہارے لئے (۵) یہ علم ہے ان کے بارے میں جو تم نہیں جانتے

الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ٦ الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ

وہ جس نے ہر چیز کو بہتر بنا دیا اور جس نے ہر چیز کو بنانے کا آغاز کیا

الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ٧ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ٨

انسان کو مٹی سے (۷) اور اس کے نسل کو پانی کے تازے پانی سے (۸)

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحٍ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ

اور اس کو سوا کر دیا اور اس میں روح پھونکا اور تمہارے لئے سناؤ اور دیکھنا

وَالْأَفْئِدَةَ ٩ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ٩ وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ

اور دلوں کو (۹) اور انہوں نے کہا کہ جب ہم زمین میں گم ہو جائیں

ءَاِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ بَلْ هُمْ بِلِقَائِي رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ﴿۱۰﴾ قُلْ

तो क्या नभे सिरसे पैदाईशमें आओगे.” बल्कि वोह अपने रबके मिलनेसे ईन्कारी हैं (१०) केह दो, कि

يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿۱۱﴾

“तुम्हारी जिन्दगी पूरी कर देगा मौतका इरिश्ता, जो मुसल्लत किया गया है तुम पर, फिर अपने रब ही की तरफ लौटाओ जाओगे” (११)

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُرْسَلُونَ نَأْتُوا رَبَّهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا

और अगर कहीं हेभो कि जब मुजरिम लोग अपना सर जुकाओ हैं अपने रबके यहाँ, कि परवरदिगारा

أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا لِنَعْمَلَ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿۱۲﴾ وَلَوْ شِئْنَا

हमने देह लिया और सुन लिया, अब दोबारा भेज दे हमें, कि हम करें नैक काम, बिलाशुभल हम यकीनवाले हो गये (१२) और अगर हम

لَا تَتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَاهَا وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلِكَنَّ جَهَنَّمَ

याहते, तो ज़रूर दे देते हर अकको उसकी राह, लेकिन बात ठीक हो चुकी मेरी तरफसे, कि ज़रूर भर दूंगा जहन्नमको

مِنَ الْجَنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿۱۳﴾ فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ

जिन्नात और ईन्सान सबसे (१३) तो यभो, जो सुवा दिया था तुम लोगोंने अपनी उस दिनकी

هَذَا إِنَّا نَسِيتُكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۱۴﴾ إِنَّمَا

हाजरीको. बिलाशुभल हमने भी तुम्हारी बूलकी सजा दी, और यभा करो हमेशाके अजाब, जो करतूत करते थे (१४) बस

يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ

मानते हैं हमारी आयतोंको वोही, जिन्हें जब याद दिलाई गई उनकी, तो गिर पड़े सजदा करते हूँ, और पाकी भयानकी अपने

رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿۱۵﴾ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

रबकी हम्दके साथ, और वोह बडा नहीं बनते (१५) अलग रहते हैं उनके पडलू प्वाभगाहोंसे,

يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ

हुडाई देते हैं अपने रबकी डरते और उम्मीद रहते. और उससे जो हमने दे रभा है उन्हें भर्य भेरात करते हैं (१६) तो

نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۱۷﴾ أَمَّنْ

कोई न जाने कि क्या छुपा रभी गई है उनके लिये आंभोंकी ठंडक. धवाभ उनके आ'मालका (१७) तो क्या जो

كَانَ مُؤْمِنًا كَسَنَ كَانَ فَاسِقًا ۗ لَّا يَسْتَوُونَ ﴿۱۸﴾ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَ

मान गया, औसा है जैसा नाइरमान ? वोह बराबर नहीं हैं (१८) कि जो मान गये और

عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

वियाकतवाले काम किये, तो उनके लिये ठिकानेके भाग हैं. महमानदारीमें, जो वोह अमल करते थे (१९)

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا

और जिसने नाकरमानी की, तो उनका ठिकाना जहन्नम है. जब उन्होंने याहा कि निकल जाओ उससे,

أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا

पलट दिये गये उसीमें, और केह दिया गया उन्हें, कि यजते रहो जहन्नमका अजाब, जिसको तुम

تُكذَّبُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَنْذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ

जुटलाते थे (२०) और ज़रूर यभाओगे हम उन्हें कुछ नजदीकवाला अजाब, अलावा भडे अजाबके,

الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ

कि वोह बाज आवें (२१) और इससे ज़्यादा अंधेरवाला कौन है, जिसे याद दिलाई गई उसके रब

أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْجَحْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا نُوحَىٰ

की आयतें, तो मुंड केर लिया उससे, बिलाशुबह हम मुजरिमोंसे बदला लेनेवाले हैं (२२) और भेशक दी हमने मूसाकी

الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدَىٰ لِّبَنِي

किताब. तो न रहो किसी शकमें उसके मिलनेसे, और कर दिया था हमने उसे छिदायत बनी

إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ آيَةً يُّهَدُونَ بِأَمْرِنَا لِمَا صَبَرُوا وَآتَوْا

ईस्राईलके लिये (२३) और बनाया था हमने उनमेंसे कई पेशवा, जो छिदायत करते थे हमारे हुकमसे, जब कि उन्होंने सभ्रसे काम लिया था.. और

كَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

था और हमारी आयतोंका यकीन रभते थे (२४) भेशक तुम्हारा रब हैसला इरमाओगा उनका क्यामतके दिन,

فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أُولَٰئِكَ يَهْدِي لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ

जिसमें वोह जगडा करते थे (२५) क्या छिदायत न इई उनकी, कि कितनी बरबाद कर दी हमने उनसे पडले

مِّنَ الْقُرُونِ يَسْتَوُونَ فِي مَسْكَتِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا

संगतें, कि यलते फिरते हैं उनके रहनेकी जगहोंमें. भेशक इसमें ज़रूर निशानियां हैं. तो क्या वोह

يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أُولَٰئِكَ يَدْرَأُونَكَ إِلَى الْمَاءِ الْغَرِيِّ يُخْرِجُ

सुनते नहीं (२६) क्या नहीं देभते कि हम पछोयाते हैं पानीको सूभी जमीनकी तरफ, फिर निकाल देते हैं

بِهِ زَرَ عَا تَا كُلِّ مِنْهُ اَلْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ اَفَلَا يَبْصُرُونَ ﴿۲۷﴾

ہر سسے بہتی، کی ہاؤے سے ہن لوگوںکے یوہاؤے، اور وول ہوڈ۔ تو کھآ نہی سؤآہ ڈےآ ہنڈے؟ (۲۷) اور

يَقُولُونَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ

ہوڈتے ہنڈے کی کہا ہے یڈ ڈےسلا؟ اگر سہے ڈو (۲۷) ہواہ ڈو کی "ڈےسہکے ڈن

لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿۲۹﴾ فَاَعْرَضْ

ن کآ ہاؤےآ ہنڈوںے کؤڈ کر رہا ہے ہنکآ ہآن ہآنآ۔ اور ن وول ہولڈلٹ ڈنڈے ہآؤےآ" (۲۷) تو ہؤڈ ڈےر لو

عَنْهُمْ وَاَنْتَظِرُ اِيْمَانَهُمْ مُّنتَظِرُونَ ﴿۳۰﴾

ہنسے، اور ہنڈآر کرؤ، کی وول ہو ڈنڈآر کرنےوالے ہنڈے (۳۰)

سُورَةُ الْاَحْزَابِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سورہ اہڈآہ ہڈننہآ

نآہسے اڈلآڈکے ہڈآ ہڈرہآن ہہشہنہوالآ

آآآآ ۷۳ رڈؤآ ۷

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ط اِنَّ

آے نہہی! ڈرتے ڈی رڈو اڈلآڈکو، اور ہآ ڈلنآ ہآننآ کآڈرؤں اور ہؤنآڈکؤںکآ۔ ہلشک

اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حٰكِيْمًا ۝۱ وَاَتَّبِعْ مَا يُوْحٰى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ اِنَّ

اڈلآڈ ہڈلہمہوالآ ڈكہمہتہوالآ ہے (۱) اور ہلرہی کرہتے رڈو ہؤ وڈکی ہآؤے ہؤہڈآرے ترڈ ہؤہڈآرے رہکی ترڈسے۔ ہلشک

اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝۲ وَتَوَكَّلْ عَلٰى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

اڈلآڈ ہؤ کؤڈ ہؤم کرؤ ہسسے ہہہرڈآر ہے (۲) اور ہرؤسآ رہے رڈو اڈلآڈ ہر۔ اور کآڈی ہے اڈلآڈ

وَكَيْلًا ۝۳ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبِيْنَ فِيْ جَوْفِهِ وَا مَا جَعَلَ

کآرسلآ (۳) نہی ہنآہآ اڈلآڈنہ کسہی شہسکے لہہ ڈو ڈلہ ہسکے انڈر۔ اور ن ہنآہآ

اَمْرًا وَا جَاكُمْ اِلَيْ تَنْظُرُوْنَ مِنْهُمْ اَمْ هُمْ لَكُمْ وَمَا جَعَلَ

ہؤہڈآر ہوہہہؤںکو ہنڈے ہؤم ہآں کڈو، ہؤہڈآر ہآںؤے۔ اور ن ہنآہآ

اَدْعِيَاءَكُمْ اَبْنَاءَكُمْ ط ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ وَاللّٰهُ

ہؤہڈآر لہہولکؤںکو ہؤہڈآر ہڈے۔ یڈ تو ہؤہڈآر ہولہ ہے اہنہ ہؤڈسے۔ اور اڈلآڈ

يَقُوْلُ الْحَقُّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝۴ اَدْعُوْهُمْ لَا اَبَاءَ لَهُمْ

ہولہتآ ہے ڈک، اور وول ڈےآ ہے رآڈ (۴) ہنڈے ہوکآرؤ، ہنڈہکے ہآہکآ ڈلہ کر،



جَاءَكُمْ مِنْ قَوْمِكُمْ وَ مِنْ أَسْفَلٍ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْبَصَارُ

आये तुम पर, तुम्हारी बुलन्दी परसे, और तुम्हारे नशेबसे, और जब कि जपक कर रह गँठ आंभें, और

بَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونًا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ

यह आये दिल गलों तक, और तुम लोग गुमान करने लगे अल्लाहके साथ तरह तरहके गुमान (१०) उस वक्त आजमाये

الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَ

गये थे ईमानवाले, और छिलाये गये थे सप्त (११) और जब बोल पड़े मुनाफ़िक लोग, और

الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ قَالُوا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝

जिनके दिलमें बीमारी है, कि नहीं वा'दा किया हमसे अल्लाह और उसके रसूलने, मगर धोकेका (१२)

وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۝

और जब बकने लगा एक गिरोह उनका, कि ओ यधरबवालो, यहाँ कोई ठिकाना नहीं है तुम्हारा, तो घर वापस जाओ. और

يَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنَ النَّبِيِّ يَقُولُونَ إِنَّا بِيُوتِنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ

ईजाजत लेने लगा है एक गिरोह उनका नबीसे. केहते हैं कि हमारे घर बेपनाह हैं. हावांकि वोह

بِعَوْرَةٍ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَلَوْ دَخَلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَوْطَارِهَا

बेपनाह नहीं. वोह नहीं यादते मगर भाग जाना (१३) और अगर झींजे घुस पडती उन पर मदीनाके दर तरक

ثُمَّ سِيلُوا الْفِتْنَةَ لَأَتَوْهَا وَمَا تَلَابَتُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا

से, फिर कहे जाते यद लोग फ़ित्ना भरपा करनेको, तो ज़रूर उससे कर गुजरते, और न देर करते उससे मगर थोड़ी (१४) हावांकि बिलाशुबह

عَاهِدُوا وَاللَّهِ مِنْ قَبْلِ لَا يُؤْتُونَ الْآدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ

अहद कर चुके थे अल्लाहसे पडले ही, कि न झेरेंगे पीठ. और अल्लाहसे अहदका

مَسْئَلًا ۝ قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفَرَارَانِ فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ

सवाल होगा (१५) केह दो, कि “हरगिज काम न होगा तुम्हें भागना,” अगर तुम भागे मौतसे या मारे जानेसे,

وَإِذْ الْأَشْتَعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِيكُمْ مِّنْ

और अब भी रहने न दिये जाओगे मगर कुछ (१६) पूछो, कि कौन है जो बयाये तुम्हें अल्लाहसे ?

اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ

अगर उसने याहा तुम्हारे लिये बुराई, या याहा तुम पर रहमत. और न पाओगे अपने लिये

دُونَ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا تَصِيرَ ۝١٥ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَ

अल्लाहके खिलाफ़को, यार न मद्दगार (१७) बेशक जानता है अल्लाह, जो रोकनेवाले हैं तुममेंसे. और

الْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبِئْسَ الْأَقْبِلِيلَ ۝١٦

जो केहनेवाले हैं अपने भाईयोंको, कि आओ हमारी तरफ़, और नहीं आते लडाईको मगर थोड़े (१८)

أَشْتَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدْوِيرًا

जान थुराते दूअे तुम्हारी मददमें. फिर जब भौंक पेश आ गया, तो तुमने देखा उन्हें कि नज़र करते हैं तुम्हारी तरफ़, घूमती

أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُعْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ السَّوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ

फिरती हैं उनकी आंभें, जैसे वोह जिस पर मौत छा जाअे. फिर जब खला गया भौंक,

سَلَقُوكُمْ بِالسِّنَةِ ۖ حَدَادٍ أَسْتَىٰ عَلَى الْخَيْرِ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَاحْبَبْ

तो घुस पड़े तुम लोगोंमें तेज ज़मान ले कर, ललचाते दूअे माल पर. यह लोग ईमान नहीं लाअे, तो मलियामैट कर दिया

اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝١٧ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ

अल्लाहने उनके अमलोंको. और यह अल्लाहकी आसान है (१८) यह लोग भयाल कर रहे हैं कि सारे

لَمْ يَدَّ هَبُوا ۚ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْا أَوْلَاءَهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ

दुश्मन लश्करवाले नहीं भागे, और अगर वोह सारे लश्कर अब आ जाअें, तो यह चाहेंगे कि काश छोते गांवके देहातियोंमें.

يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۖ لَقَدْ كَانَ

दरियाफ़्त किया करें तुम लोगोंकी भबर्हें, और अगर तुम्हींमें रहते, तो भी लडाईको न आते मगर थोड़े (२०) यकीनन तुम्हारे लिये

لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ

अल्लाहके रसूलमें अच्छा नमूना है उसके लिये, जो उम्मीदवार रहा अल्लाहका, और पिछले दिनका,

وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝١٨ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا

और याद करता रहा अल्लाहको बहुत (२१) और जब देखा ईमानवालोंने इन सारे लश्करोंको, केहने लगे कि यह है जिसका वा'दा करमाया

اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۝١٩

हमसे अल्लाह और उसके रसूलने, और सच करमाया अल्लाह और उसके रसूलने. और नहीं बढ़ा उनकी, मगर ईमान व नियाजमन्दी (२२)

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ

मुसलमानोंमें वोह मर्दे मैदान हैं, कि सच कर दिभाया जिसका अहद किया अल्लाहसे. तो किसीने

قَضَىٰ حُجْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَأُوا تَبْدِيلًا ۗ لِيَجْزِيَ اللَّهُ

पूरी कर ली अपनी मन्नत, और कोरि ठन्तिआर कर रखा है, और वोड कुछ भी न बदले (२३) ताकि घवाभ दे अल्लाह

الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ أَوْ يَتُوبَ

सख्योंको उनकी सख्याईका, और अजाभ दे मुनाफ़िकोंको अगर चाहे, या तौफीके तौबा दे

عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۗ وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا

उन्हें. भेशक अल्लाह गकूररहीम है (२४) और पलटा दिया अल्लाहने जिन्होंने कुङ किया

بِعَظِيمِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۗ وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۗ وَكَانَ

उनकी जलनके साथ, न पाई उन्होंने कोरि लवाई. और काफ़ी रखा अल्लाह ईमानवालोंके लिये लडाईमें. और

اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۗ وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ

अल्लाह कुव्वतवाला गल्बेवाला है (२५) और उतार दिया उन्हें, जिन्होंने मददकी थी उनकी अडले किताबसे,

صِيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۗ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ

उनके डिलोंसे, और डाल दिया उनके दिलोंमें डैभत, कुछको तुम लोग कत्व करते, और कुछको

فَرِيقًا ۗ وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَوَدْيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطَّوُّهَا ۗ

कैद करते (२६) और कब्जा दिया तुम्हें उनकी जमीन और घरों और मालों पर, और उस जमीन पर कि तुमने कदम न रखा जहां. और

كَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۗ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَ أَرْوَاهُ كِتَابًا

अल्लाह डर चाहे पर कादिर रखा (२७) ऐ आं डजरत ! केड दो अपनी भीबियोंको, कि

كُنْتُمْ تُرَدُّنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعِكُنَّ وَأَسْرَحَكُنَّ

“अगर तुम याडती हो दुन्यावी जिन्दगी और उसकी आराईश, तो आओ में सामान दे दूं तुम्हें, और छोड दूं

سَرَاحًا جَمِيلًا ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ تُرَدُّنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْأَرْضَ الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ

अखी तरड (२८) और अगर याडती हो अल्लाह और उसके रसूलको और पिछले घरको, तो भेशक अल्लाह

أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۗ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ مِنْ يَأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ

ने तेयार कर रखा है नेक भीबियोंके लिये तुममेंसे, भडा घवाभ” (२८) ऐ आं डजरतकी भीबियो ! “जो कर लाये तुममेंसे कोरि भुली

قُبَيْبَةٍ يُضَعِفْ لَهَا الْعَذَابَ ضِعْفَيْنِ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۗ

नाकरमानी, तो दूना किया जायेगा उसका अजाभ डबल. और यह अल्लाहकी आसान है (३०)